

SUPER SUCCESS INSTITUTE, MUZAFFARNAGAR

Hindi Typing Course- E-learning

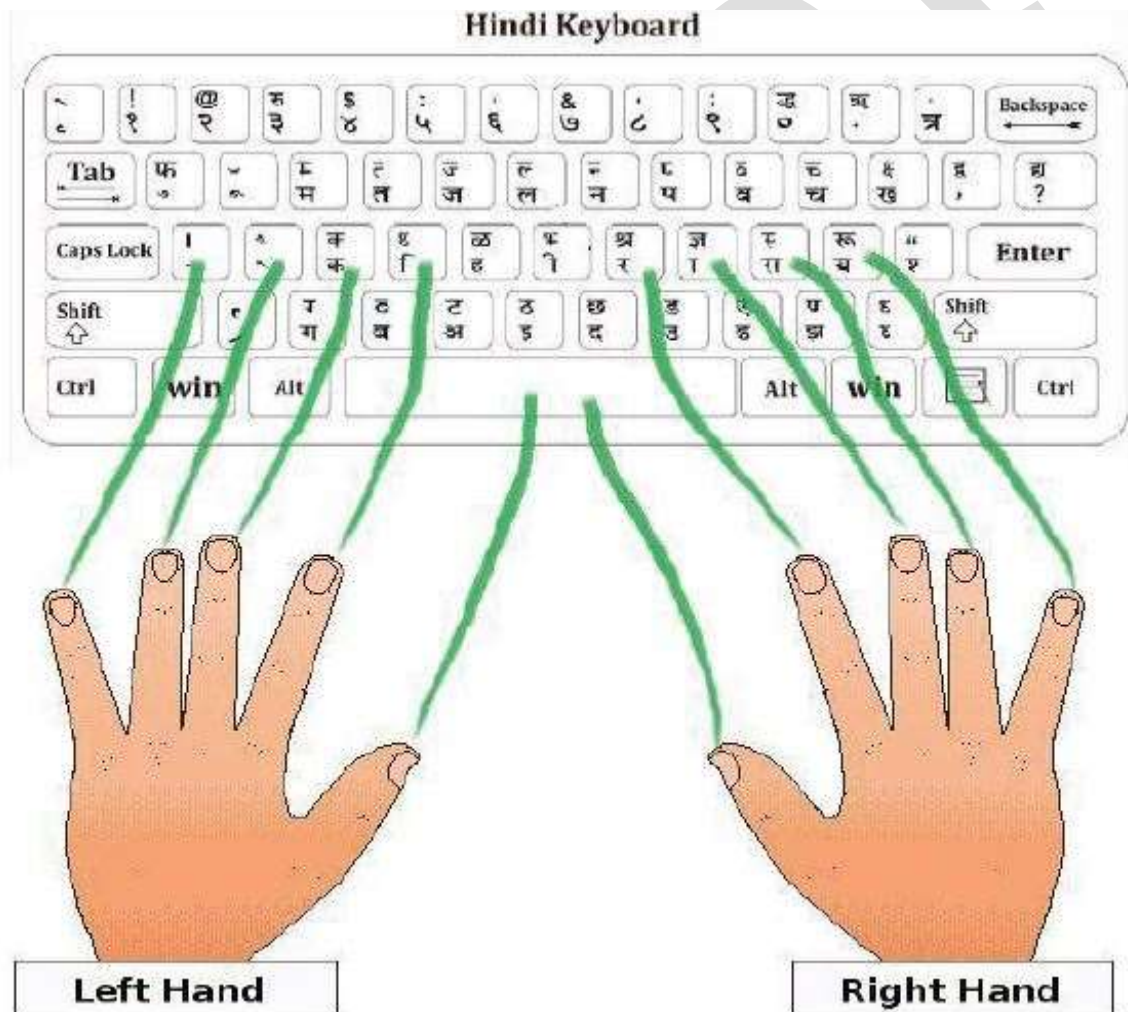
ई-लर्निंग हिन्दी टंकण

Lesson No.	Description of Lesson	Practice	Working
		Time	Day
Lesson 1	Hindi Typing Basics	---	---
Lesson 2	Home Row Keys का अभ्यास	1 Hrs	4 Days
Lesson 3	Home Row के सरल शब्दों का अभ्यास	1 Hrs	4 Days
Lesson 4	Shift + Home Row के अक्षरों का अभ्यास	1 Hrs	4 Days
Lesson 5	Upper Row के 8 अक्षरों का अभ्यास	1 Hrs	4 Days
Lesson 6	Upper Row के 12 अक्षरों का अभ्यास	1 Hrs	4 Days
Lesson 7	Shift + Upper Row के अक्षरों का अभ्यास	1 Hrs	4 Days
Lesson 8	Bottom Row के 8 अक्षरों का अभ्यास	1 Hrs	4 Days
Lesson 9	Bottom Row के 10 अक्षरों का अभ्यास	1 Hrs	4 Days
Lesson 10	Shift + Bottom Row के अक्षरों का अभ्यास	1 Hrs	4 Days
Lesson 11	All Rows के अक्षरों का अभ्यास	1 Hrs	4 Days
Lesson 12	Number Row के अक्षरों का अभ्यास	1 Hrs	4 Days
Lesson 13	Shift + Number Row के अक्षरों का अभ्यास	1 Hrs	4 Days
Lesson 14	Paragraph का अभ्यास	1 Hrs	8 Days
Lesson 15	आवेदन / पत्र लिखने का अभ्यास	1 Hrs	4 Days
Lesson 16	हिन्दी फॉन्ट Kurti Dev 010 के विशेष अक्षर	---	---

Lesson 1 Hindi Typing Basics

Keyboard पर उंगलियों को रखना :-

हिंदी एवं अंग्रेजी टाइपिंग में उंगलियों को समान प्रकार से ही निचे दिए हुए इमेज के अकोर्डिंग की परखा जाता है! हमेशा इन्हीं उंगलियों को अन्य अक्षर / अंक टाइप करने के लिए उस को दबाने के बाद फर से उंगलिया पर ही रखते है!



Lesson 2 Home Row Keys का अभ्यास

1

क िँ ह िी श य स ा र क िँ ह िी श य स ा र क िँ

ह िी श

2

य स ा र क िँ ह िी श य स ा र क िँ ह िी श य स ा

र क िँ

3

ँ ह िी श य स ा र क िँ ह िी श य स ा र क िँ ह िी श

य स

4

ा र क िँ ह िी श य स ा र क िँ ह िी श य स ा र

क िँ ह

ी श य स ा र क िँ ह िी श य स ा र

3 Home Row के सरल शब्दों का अभ्यास

5

कह कस सर हर कर किस सिर शीश सह हीरा सारा कार

काश

6

काक हास हार हीर हीरा यार राह काही कोरा होश सारी रिहा

राहीसारी सही कसी शकर

7

सोहर शिकार शिकारी कहिस कहिये रहिये रोकिये सहाय सारिका

सहारा कहार कह कस सर

8

हर कर किस सिरशीश सह हीरा सारा कार काश काक हास हार

4 : Shift + Home Row के अक्षरों का अभ्यास

9

| " व ९ ळ ॡ ँ रु स ज्ञ श्र | " व ९ ळ ॡ ँ रु स ज्ञ

10

श्र | " व ९ ळ ॡ ँ रु स ज्ञ श्र | " व ९ ळ ॡ ँ रु स ज्ञ

11

श्र | " व ९ ळ ॡ ँ रु स ज्ञ श्र | " व ९ ळ ॡ ँ रु स
ज्ञ श्र | " व ९ ळ ॡ ँ रु स ज्ञ श्र | " व ९ ळ ॡ ँ रु स

12

ज्ञ श्र | " व ९ ळ ॡ ँ रु स ज्ञ श्र | " व ९ ळ ॡ ँ रु
स ज्ञ श्र | " व ९ ळ ॡ ँ रु स ज्ञ श्र

5: Upper Row के 8 अक्षरों का अभ्यास

13

म त ज ल ख च प व नू म त ज ल ख च प व नू म त ज ल ख च प व नू म

14

त ज ल ख च प व नू म त ज ल ख च प व नू म त ज ल ख च प व नू म त

15

ज ल ख च प व नू म त ज ल ख च प व नू म त ज ल ख च प व नू म त ज

16

ल ख च प व नू म त ज ल ख च प व नू म त ज ल ख च प व नू म त ज ल
ख च प व न

Lesson 6 Upper Row के 12 अक्षरों का अभ्यास

17

मत जल चख पच कन चना चार पान मान खान नाम पाप चमन जलन खलन

18

चखत मजाल सजाल चपाती नानी तीरथ भरनी करनी खजाना नमस्ते

19

भरपूर जनमत करतव नमकीन चमकीला मलीनता कमीनता खलभरी नमकीना

20

महकना चहकना मनमाना मनमानी करामाती जलजीरा मलमल मामाजी मत जल
चख पचकन चना चार पान मान

Lesson 7 Shift + Upper Row के अक्षरों का अभ्यास

Day 21

फ त उ ल क्ष च ट ण न् ण फ त उ ल क्ष च ट ण न् ण फ त उ
ल

Day 22

क्ष च ट ण न् ण फ त उ ल क्ष च ट ण न् ण फ त उ ल क्ष च ट ण

Day 23

न् ण फ त उ ल क्ष च ट ण न् ण फ त उ ल क्ष च ट ण न् ण फ त

Day 24

उ ल क्ष च ट ण न् ण फ त उ ल क्ष च ट ण न् ण फ त उ ल क्ष
च ट ण न्

Lesson 8 Bottom Row के 8 अक्षरों का अभ्यास

Day 25

ब अ इ ऋ ए उ द, ग ब अ इ ऋ ए उ द, ग ब

Day 26

अ इ ऋ ए उ द, ग ब अ इ ऋ ए उ द, ग ब अ इ

Day 27

ऋ ए उ द, ग ब अ इ ऋ ए उ द, ग ब अ इ ऋ

ए उ द, ग ब अ इ ऋ ए उ द, ग ब अ इ ऋ ए

Day 28

उ द, ग ब अ इ ऋ ए उ द, ग ब अ इ ऋ ए उ

द, ग ब अ इ ऋ ए उ द, ग ब अ इ ऋ ए उ द

Lesson 9 Bottom Row के 10 अक्षरों का अभ्यास

Day 29

ग्रह अब ब्रज धन धू अक्ष ध्यान इकाइ उदय मलय ऐनक सकल ब्रोकेन

Day 30

एकाग्र ग्रहण उधर इधर एकाग्रता उकसाना अब तक अधिकार अध्याय

Day 31

अधिभार अध्यादेश कब्रगाह रामायण नारायण धन्यवाद अबरार अजगर

Day 32

बरगद श्रवणीय रमणीय अनुकरण अनुसरण उपग्रह अम्बरीय एकाएक
धनवान धनहीन जीवन कबीर अबरार कराना धरना अभिकरण अनुराग

Lesson 10 Shift + Bottom Row के अक्षरों का अभ्यास

Day 33

ग ढ ट ठ ढ झ ढ ड छ^१ ग ढ ट ठ ढ झ ढ ड छ^१ ग

Day 34

ढ ट ठ ढ झ ढ ड छ^१ ग ढ ट ठ ढ झ ढ ड छ^१ ग ढ ट

Day 35

ठ ढ झ ढ ड छ^१ ग ढ ट ठ ढ झ ढ ड छ^१ ग ढ ट ठ
ढ झ ढ ड छ^१ ग ढ ट ठ ढ झ ढ ड छ^१ ग ढ ट ठ ढ झ

Day 36

ढ ड छ^१ ग ढ ट ठ ढ झ ढ ड छ^१ ग ढ ट ठ ढ झ ढ ड
छ^१ ग ढ ट ठ ढ झ ढ ड छ^१ ग ढ ट ठ ढ झ ढ ड छ

Lesson 11 All Rows के अक्षरों का अभ्यास

Day 37

झरना ठहाका ठठेरा राजेन्द्र ठिकाना ठहाका गब्बर ग्यारह छब्बन छप्पन
छहरना झरझर टमटम टर्टर ठाटबाट ढकोसला ढक्कन ढपोल शंख

Day 38

रग्धूलाल घमण्डी घसियारा घासीराम घटाटोप गुरुघण्टाल ग्वालटोली
ग्नानियुक्त ग्यारह म्यानसागर ग्यानचौकी ग्यानज्योति छिछोरा घनानन्द

Day 39

घनचक्कर घनाक्षरी धनधर्माड दर्पयुक्त झज्झराना झण्डावाला कण्डावाला
माण्डावाला तुलसीराम मनालीराम भगतलाल भँवरीलाल भवानीमण्डी पाखण्डी

Day 40

कर्मयोगी धर्मराज युधिष्ठिर कालभैरव कालखण्ड महिसागर महिषासुर
महानुभव महाभियोग महानुभव मरणासन्न जीवनपर्यंत जरासंध

दुर्योधन

Lesson 12 Number Row के अक्षरों का अभ्यास

Day 41

1 2 3 4 5 6 7 8 9 0 त्र_८ 1 2 3 4 5 6 7 8 9 0

Day 42

. त्र_८ 1 2 3 4 5 6 7 8 9 0 त्र_८ 1 2 3 4 5 6 7

Day 43

8 9 0 . त्र_८ 1 2 3 4 5 6 7 8 9 0 त्र_८ 1 2 3 4

5 6 7 8 9 0 त्र_८ 1 2 3 4 5 6 7 8 9 0 त्र_८ 1 2

Day 44

3 4 5 6 7 8 9 0 . त्र_८ 1 2 3 4 5 6 7 8 9 0 . त्र_८

1 2 3 4 5 6 7 8 9 0 . त्र

Lesson 13 Shift + Number Row के अक्षरों का अभ्यास

Day 45

! / : ' - ; ढ ऋ ! / : ' - ; ढ ऋ ! / : ' - ; ढ ऋ ! / :

Day 46

' - ; ढ ऋ ! / : ' - ; ढ ऋ ! / : ' - ; ढ ऋ ! / : ' -

Day 47

; ढ ऋ ! / : ' - ; ढ ऋ ! / : ' - ; ढ ऋ ! / : ' - ; ढ

Day 48

ऋ ! / : ' - ; ढ ऋ ! / : ' - ; ढ ऋ ! / : ' - ; ढ ऋ !
/ : ' - ; ढ ऋ

Lesson 14 Paragraph का अभ्यास

Day 49 To 50

[2 Days]

भारतीय संस्कृति को विश्व स्तर पर पहचान दिलाने वाले महापुरुष स्वामी ववेकानंद जी का जन्म 12 जनवरी 1863 को सूर्योदय से 6 मिनट पूर्व 6 बजकर 33 मिनट 33 सेकेण्ड पर हुआ। भुवनेश्वरी देवी के विश्व वजयी पुत्र का स्वागत मंगल शंख बजाकर मंगल ध्वनी से किया गया। ऐसी महान वभूती के जन्म से भारत माता भी गौरवान्वित हुई। बालक की आकृति एवं रूप बहुत कुछ उनके सन्यासी पतामह दुर्गादास की तरह था। परिवार के लोगों ने बालक का नाम दुर्गादास रखने की इच्छा प्रकट की, कन्तु माता द्वारा देखे स्वपन के आधार पर बालक का नाम वीरेश्वर रखा गया। प्यार से लोग 'बिले' कह कर बुलाते थे। हिन्दू मान्यता के अनुसार संतान के दो नाम होते हैं, एक राशी का एवं दूसरा जन साधारण में प्रचलित नाम, तो अन्नप्रासन के शुभ अवसर पर बालक का नाम नरेन्द्र नाथ रखा गया। नरेन्द्र की बुद्धि बचपन से ही तेज थी। बचपन में नरेन्द्र बहुत नटखट थे। भय, फटकार या धमकी का असर उन पर नहीं होता था। तो माता भुवनेश्वरी देवी ने अदभुत उपाय सोचा, नरेन्द्र का अशुभ आचरण जब बढ़ जाता तो, वो शव शव कह कर उनके ऊपर जल डाल देती। बालक नरेन्द्र एकदम शान्त हो जाते। इसमें संदेह नहीं कि बालक नरेन्द्र शव का ही रूप थे। माँ के मुँह से रामायण महाभारत के कस्से सुनना नरेन्द्र को बहुत अच्छा लगता था। बाल्यावस्था में नरेन्द्र नाथ को गाड़ी पर घूमना बहुत पसन्द था। जब कोई पूछता बड़े हो कर क्या बनोगे तो मासूमयत से कहते कोचवान बनूँगा। पाश्चात्य सभ्यता में विश्वास रखने वाले पता विश्वनाथ दत्त अपने पुत्र को अंग्रेजी शिक्षा देकर पाश्चात्य सभ्यता में रंगना चाहते थे। कन्तु नियती ने तो कुछ खास प्रयोजन हेतु बालक को अवतरित किया था। ये कहना अतिशयोक्ती न होगा कि भारतीय संस्कृति को विश्वस्तर पर पहचान दिलाने का श्रेय अगर किसी को जाता

हैं तो वो हैं स्वामी ववेकानंद । व्यायाम , कुश्ती , क्रिकेट आदी में नरेन्द्र की विशेष रुची थी । कभी कभी मंत्रों के साथ हास -परिहास में भी भाग लेते । जनरल असेम्बली कॉलेज के अध्यक्ष वलयम हेस्टी का कहना था क नरेन्द्रनाथ दर्शन शास्त्र के अतिउत्तम छात्र हैं । जर्मनी और इंग्लैण्ड के सारे विश्व विद्यालयों में नरेन्द्रनाथ जैसा मेधावी छात्र नहीं है । नरेन्द्र के चरित्र में जो भी महान है , वो उनकी सुशक्त एवं वचारशील माता की शिक्षा का ही परिणाम है ।

Day 51 To 52 [2 Days]

नरेन्द्र को बचपन से ही परमात्मा को पाने की चाह थी । डेकार्ट का अहवाद , डार्विन का विकासवाद , स्पेंसर के अद्वैतवाद को सुनकर नरेन्द्रनाथ सत्य को पाने का लये व्याकुल हो गये । अपने इसी उद्देश्य की पूर्ती हेतु ब्रह्मसमाज में गये कन्तु वहाँ उनका चत शान्त न हुआ । रामकृष्ण परमहंस की तारीफ सुनकर नरेन्द्र उनसे तर्क के उद्देश्य से उनके पास गये कन्तु उनके वचारों से प्रभावित हो कर उन्हें गुरु मान लिया । परमहंस की कृपा से उन्हें आत्म साक्षात्कार हुआ । नरेन्द्र परमहंस के प्रिय शिष्यों में से सर्वोपरि थे । 25 वर्ष की उम्र में नरेन्द्र ने गेरुवावस्त्र धारण कर सन्यास ले लिया और विश्व भ्रमण को निकल पड़े । 1893 में शिकागो विश्व धर्म परिषद में भारत के प्रतीनिधी बनकर गये कन्तु उस समय युरोप में भारतीयों को हीन दृष्टि से देखते थे । उगते सूरज को कौन रोक पाया है , वहाँ लोगों के विरोध के बावजूद एक प्रोफेसर के प्रयास से स्वामी जी को बोलने का अवसर मिला । स्वामी जी ने बहिनों एवं भाईयों कहकर श्रोताओं को संबोधित किया । स्वामी जी के मुख से ये शब्द सुनकर करतल ध्वनी से उनका स्वागत हुआ । श्रोता उनको मंत्र मुग्ध सुनते रहे निर्धारित समय कब बीत गया पता ही न चला । अध्यक्ष गबन्स के अनुरोध पर स्वामी जी आगे बोलना शुरू कये तथा । 20 मिनट से अधिक बोले । उनसे अभिभूत हो हजारों लोग उनके शिष्य बन गये । आलम ये था क जब कभी सभा में शोर होता तो उन्हें स्वामी जी के भाषण सुनने

का प्रलोभन दिया जाता सारी जनता शान्त हो जाती । अपने व्यख्यान से स्वामी जी ने सद्ध कर दिया क हिन्दु धर्म भी श्रेष्ठ है , उसमें सभी धर्मों समाहित करने की क्षमता है। इस अदभुत सन्यासी ने सात समंदर पार भारतीय संस्कृती की ध्वजा को फैराया । स्वामी जी केवल संत ही नहीं देशभक्त , वक्ता , वचारक , लेखक एवं मानव प्रेमी थे । 1899 में कोलकता में भीषण प्लेग फैला , अस्वस्थ होने के बावजूद स्वामी जी ने तन मन धन से महामारी से ग्रस्त लोगों की सहायता करके इंसानियत की मसाल दी । स्वामी ववेकानंद ने , 1 मई , 1897 को रामकृष्ण मशन की स्थापना की । रामकृष्ण मशन , दूसरों की सेवा और परोपकार को कर्मयोग मानता है जो क हिन्दुत्व में प्रतिष्ठित एक महत्वपूर्ण सध्दान्त है । 39 वर्ष के संक्षिप्त जीवन काल में स्वामी जी ने जो अदभुत कार्य कये हैं . वो आने बानी पढीयों को मार्ग दर्शन करते रहेंगे । 4 जुलाई 1902 को स्वामी जी का अनौकक शरीर परमात्मा मे वलीन हो गया । स्वामी जी का आदर्श - उठो जागो और तब तक न रुको जब तक मंजिन प्राप्त न हो जाए अनेक युवाओं के लये प्रेरणा स्रोत है । स्वामी ववेकानंद जी का जन्मदिन राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है । उनकी शिक्षा में सर्वोपरी शिक्षा है " मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है । "

Day 53 To 54
[2 Days]

जो नित्य एवं स्थाई प्रतीत होता है , वह भी वनाशी है । जो महान प्रतीत होता है , उसका । भी पतन है । जहाँ संयोग है वहाँ वनाश भी है । जहाँ जन्म है वहाँ मरण भी है । ऐसे सारस्वत सच वचारों को आत्मसात करते हुए महात्मा बुद्ध ने बौद्ध धर्म की स्थापना की जो वश्व के । प्रमुख धर्मों में से एक है । वश्व के प्रसद्ध धर्म सुधारकों एवं दार्शनिकों में अग्रणी महात्मा बुद्ध के जीवन की घटनाओं का ववरण अनेक बौद्ध ग्रन्थ जैसे- बनिबिस्तर , बुद्धचरित , महावस्तु एवं सुतनिपात । से ज्ञात होता है । भगवान बुद्ध का जन्म क पलवस्तु के पास जुम्बिनी वन में 563 ई.पू. में हुआ । था । आपके पता शुद्धोधन शाक्य राज्य

क पलवस्तु के शासक थे । माता का नाम महामाया था । जो देवदह की राजकुमारी थी । महात्मा बुद्ध अर्थात् सद्वार्थ (बचपन का नाम) के जन्म के । सातवें दिन माता महामाया का देहान्त हो गया था , अतः उनका पालन - पोषण उनकी मौसी व वमाता प्रजापति गौतमी ने किया था । सद्वार्थ बचपन से ही एकान्त प्रिय , मननशील एवं दयावान प्रवृत्त के थे । जिस कारण । आपके पता बहुत चिन्तित रहते थे । उपाय स्वरूप सद्वार्थ की 16 वर्ष की आयु में गणराज्य की । राजकुमारी यशोधरा से शादी करवा दी गई । ववाह के कुछ वर्ष बाद एक पुत्र का जन्म हुआ । जिसका नाम राहुल रखा गया । समस्त राज्य में पुत्र जन्म की खुशियां मनाई जा रही थी लेकिन । सद्वार्थ ने कहा , आज मेरे बन्धन की श्रृंखला में एक कड़ी और जुड़ गई । यद्यपि उन्हें समस्त सुख प्राप्त थे , कन्तु शान्ति प्राप्त नहीं थी । चार दृश्यों (वृद्ध , रोगी , मृतव्यक्ति एवं सन्यासी) ने । उनके जीवन को वैराग्य के मार्ग की तरफ मोड़ दिया । अतः एक रात पुत्र व अपनी पत्नी को । सोता हुआ छोड़कर गृह त्यागकर ज्ञान की खोज में निकल पड़े । गृह त्याग के पश्चात् सद्वार्थ मगध की राजधानी राजगृह में अनार और उद्रक नामक । दो बाहमणों से ज्ञान प्रप्ति का प्रयत्न कये कन्तु संतुष्टि नहीं हुई । तदपश्चात् निरंजना नदी के । किनारे उरवने नामक वन में पहुंचे , जहाँ आपकी भेंट पाँच ब्राह्मण तपस्वियों से हुई । इन । तपस्वियों के साथ कठोर तप कये परन्तु कोई लाभ न मल सका । इसके पश्चात् सद्वार्थ गया (बिहार) पहुँचे , वहाँ वह एक वट वृक्ष के नीचे समाधी लगाये और प्रतिज्ञा की क जबतक ज्ञान प्राप्त नहीं होगा , यहाँ से नहीं हटुंगा । सात दिन व सात रात समाधस्थ रहने के उपरान्त आठवें दिन वैशाख पूर्णमा के दिन आपको सच्चे ज्ञान की अनुभूति हुई । इस घटना को सम्बोध " कहा । गया । जिस वट वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ था उसे बोध वृक्ष तथा गया को बोध गया कहा जाता है ।

Day 55 To 56

[2 Days]

ज्ञान प्राप्ति के पश्चात महात्मा बुद्ध सर्वप्रथम सारनाथ (बनारस के निकट) में अपने पूर्व के पाँच सन्यासी साथियों को उपदेश दिये । इन शिष्यों को " पंचवर्गीय कहा गया । महात्मा बुद्ध द्वारा दिये गये इन उपदेशों की घटना को 'धर्म - चक्र - प्रवर्तन कहा जाता है । भगवान बुद्ध । क पलवस्तु भी गये । जहाँ उनकी पत्नी , पुत्र व अनेक शाक्यवंशिय उनके शिष्य बन गये । बौद्ध धर्म के उपदेशों का संकलन ब्राह्मण शिष्यों ने त्रि पटकों के अंतर्गत किया । त्रि पटक संख्या में तीन हैं 1- वनय पटक , 2- सुत पटक , 3- अभधम्म पटक इनकी रचना पानी भाषा में की गई है । हिन्दू - धर्म में वेदों का जो स्थान है , बौद्ध धर्म में वही स्थान पटकों का है । भगवान बुद्ध के उपदेशों एवं वचनों का प्रचार प्रसार सबसे ज्यादा सम्राट अशोक ने किया । कलिंग युद्ध में हुए नरसंहार से व्यथित होकर अशोक का हृदय परिवर्तित हुआ उसने । महात्मा बुद्ध के उपदेशों को आत्मसात करते हुए इन उपदेशों को अभिलेखों द्वारा जन - जन तक । पहुंचाया । भीमराव आम्बेडकर भी बौद्ध धर्म के अनुयायी थे । महात्मा बुद्ध आजीवन सभी नगरों में घूम - घूम कर अपने वचारों को प्रसारित करते रहे । । भ्रमण के दौरान जब वे पावा पहुँचे , वहाँ उन्हें अतिसार रोग हो गया था । तदपश्चात कुशीनगर । । गये जहाँ 483 ई.पू. में वैशाख पूर्णमा के दिन अमृत आत्मा मानव शरीर को छोड़ ब्रह्माण्ड में । बिन हो गई । इस घटना को महापरिनिर्वाण कहा जाता है । महात्मा बुद्ध के उपदेश आज भी । देश - वदेश में जनमानस का मार्ग दर्शन कर रहे हैं । भगवान बुद्ध प्राणी हिंसा के सख्त वरोधी । थे । उनका कहना था क , " जैसे मैं हूँ , वैसे ही वे हैं , और जैसे वे हैं , वैसा ही मैं हूँ । इस प्रकार सबको अपने जैसा समझकर न किसी को मारें , न मारने को प्रेरित करें । भगवान बुद्ध के सुवचारों के साथ ही मैं अपनी कलम को वराम देना चाहूंगी . हम जो कुछ भी हैं वो हमने आज तक क्या सोचा इस बात का परिणाम है । यदि कोई व्यक्ति बुरी सोच । के साथ बोलता या काम करता है , तो उसे कष्ट ही मिलता है । यदि कोई व्यक्ति शुद्ध

वचारों | के साथ बोलता या काम करता है . तो परछाई की तरह ही प्रसन्नता उसका साथ कभी नहीं छोड़ती ।

Lesson 15 आवेदन / पत्र लखने का अभ्यास

Day 57 To 58
[2 Days]

सेवा में,

श्रीमान अधीक्षक (र डयो) महोदय,
मुजफ्फरनगर झोन , मुजफ्फरनगर ,
द्वारा : - उ चत माध्यम ।

वषय : - 03 दिवस आकस्मिक अवकाष दि . 2-4 जुन 2021 का स्वीकृत करने बाबत् ।

महोदय,

स वनय वनम निवेदन है , क प्रार्थी को अपने घर पर बारिष पूर्व कुछ मरम्मत कार्य | करवाना है । जिसके लए अवकाष की आवश्यकता है ।

अत . श्रीमानजी से अनुरोध है क प्रार्थी का 03 दिवस आकस्मिक अवकाष दिनांक | 2-4 जुन 2021 का स्वीकृत करने की कृपा करें । यहीं वनय है ।

नोट : - दि . 01.07.21 के अपरान्ह से अवकाष पर जाना चाहता है ।

प्रार्थी

(सुनील कुमार)

आरक्षक (र डयो)

मुजफ्फरनगर झोन , मुजफ्फरनगर .

Day 59 To 60
[2 Days]

कार्यालय महानिरीक्षक / निदेशक , कंप्यूटर ट्रेनिंग स्कूल , मुजफ्फरनगर

क्रमांक - पी.आर.टी.एस. / ई . / कोर्स / / 2021 दिनांक - / / 21

प्रति,

जिला अ भयोजन अ धकारी,
मुजफ्फरनगर (म.प्र .)

वषय : एक सहायक जिला अ भयोजन अ धकारी को अति थ व्याख्यान देने हेतु भेजने बाबत ।

कृपया उपरोक्त वषयांतर्गत लेख है क कंप्यूटर प्र षक्षण शाला , मुजफ्फरनगर में परिवीक्षाधीन उप निरीक्षकों के लए सायबर कार्डिम केप्सूल कोर्स संचालित किया जा रहा है ।

उक्त कोर्स में आई.टी. एक्ट वषय पर अति थ व्याख्यान देने हेतु एक सहायक जिला अ भयोजन अ धकारी को दिनांक 18/04/21 के समय 09:30 बजे से अति थ व्याख्यान देने हेतु भेजा जाना सुनिश्चित करें ।

निदेशक

(पु.म.नि.) . कंप्यूटर प्र षक्षण शाला , मुजफ्फरनगर

Lesson 16 हिन्दी फॉन्ट Kurti Dev 010 के विशेष अक्षर

क.सं.	अक्षर	कोड	क.सं.	अक्षर	कोड
1	।	Alt+033	34	ट	Alt+066
2	ॢ	Alt+034	35	ठ	Alt+067
3	ॣ	Alt+035	36	ड	Alt+068
4	।	Alt+036	37	ॡ	Alt+069
5	॥	Alt+037	38	ॢ	Alt+070
6	०	Alt+038	39	ॣ	Alt+071
7	१	Alt+039	40	।	Alt+072
8	२	Alt+040	41	॥	Alt+073
9	ॢ	Alt+041	42	ॣ	Alt+074
10	ॣ	Alt+042	43	।	Alt+075
11	।	Alt+043	44	॥	Alt+076
12	॥	Alt+044	45	ॢ	Alt+077
13	ॢ	Alt+045	46	ॣ	Alt+078
14	ॣ	Alt+046	47	।	Alt+079
15	।	Alt+047	48	॥	Alt+080
16	॥	Alt+048	49	ॢ	Alt+081
17	ॢ	Alt+049	50	ॣ	Alt+082
18	ॣ	Alt+050	51	।	Alt+083
19	।	Alt+051	52	॥	Alt+084
20	॥	Alt+052	53	ॢ	Alt+085

क.सं.	अक्षर	कोड	क.सं.	अक्षर	कोड
87	ॣ	Alt+099	100	।	Alt+0135
88	।	Alt+0100	101	॥	Alt+0136
89	॥	Alt+0101	102	ॢ	Alt+0137
70	ॢ	Alt+0102	103	ॣ	Alt+0138
71	ॣ	Alt+0103	104	।	Alt+0139
72	।	Alt+0104	105	॥	Alt+0140
73	॥	Alt+0105	106	ॢ	Alt+0145
74	ॢ	Alt+0106	107	ॣ	Alt+0146
75	ॣ	Alt+0107	108	।	Alt+0147
76	।	Alt+0108	109	॥	Alt+0148
77	॥	Alt+0109	110	ॢ	Alt+0150
78	ॢ	Alt+0110	111	ॣ	Alt+0151
79	ॣ	Alt+0111	112	।	Alt+0152
80	।	Alt+0112	113	॥	Alt+0153
81	॥	Alt+0113	114	ॢ	Alt+0155
82	ॢ	Alt+0114	115	ॣ	Alt+0159
83	ॣ	Alt+0115	116	।	Alt+0160
84	।	Alt+0116	117	॥	Alt+0161
85	॥	Alt+0117	118	ॢ	Alt+0162
86	ॢ	Alt+0118	119	ॣ	Alt+0163

क.सं.	अक्षर	कोड	क.सं.	अक्षर	कोड
21	।	Alt+053	54	॥	Alt+086
22	॥	Alt+054	55	ॢ	Alt+087
23	ॢ	Alt+055	56	ॣ	Alt+088
24	ॣ	Alt+056	57	।	Alt+089
25	।	Alt+057	58	॥	Alt+090
26	॥	Alt+058	59	ॢ	Alt+091
27	ॢ	Alt+059	60	ॣ	Alt+092
28	ॣ	Alt+060	61	।	Alt+093
29	।	Alt+061	62	॥	Alt+094
30	॥	Alt+062	63	ॢ	Alt+095
31	ॢ	Alt+063	64	ॣ	Alt+096
32	ॣ	Alt+064	65	।	Alt+097
33	।	Alt+065	66	॥	Alt+098

क.सं.	अक्षर	कोड	क.सं.	अक्षर	कोड
87	ॣ	Alt+0119	120	।	Alt+0164
88	।	Alt+0120	121	॥	Alt+0165
89	॥	Alt+0121	122	ॢ	Alt+0167
90	ॢ	Alt+0122	123	ॣ	Alt+0168
91	ॣ	Alt+0123	124	।	Alt+0169
92	।	Alt+0124	125	॥	Alt+0170
93	॥	Alt+0125	126	ॢ	Alt+0171
94	ॢ	Alt+0126	127	ॣ	Alt+0174
95	ॣ	Alt+0130	128	।	Alt+0177
96	।	Alt+0131	129	॥	Alt+0179
97	॥	Alt+0132	130	ॢ	Alt+0180
98	ॢ	Alt+0133	131	ॣ	Alt+0182
99	ॣ	Alt+0134	132	।	Alt+0183